सिंहासन डोल उठा है

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफ़े,मतदाता सूची से कथित तौर पर करोड़ों मतदाताओं के नाम हटाए जाने,एस आई आर/स्पेशल इंटेंसिव रिवीज़न को रद्द करने व चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से जुड़ा 2023 का क़ानून रद्द करने आदि के विरोध में गत दस 10 अक्टूबर को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में अभूतपूर्व सुरक्षा,लॉक डाउन, भारी जन आक्रोश और व्यापक गिरफ़्तारियों का माहौल रहा।

इस प्रदर्शन को रोकने के लिए प्रशासन ने पूरी दिल्ली को एक क़िले के रूप में तब्दील कर दिया था। दिल्ली पुलिस सहित केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के लगभग 40 हज़ार जवानों को तैनात किया गया था। 57 मेट्रो स्टेशन पूरी तरह बंद थे। मध्य दिल्ली की ओर आने वाली कई ट्रेनों को रद्द या री-रूट किया गया था। धारा 163 पूर्ववर्ती 144 लागू करके किसी भी प्रकार की सभा या जुलूस पर पूर्ण रोक लगा दी गई थी। जंतर-मंतर जाने वाले सभी रास्तों पर कई स्तरों की भारी बैरिकेडिंग की गई थी। मोबाइल इंटरनेट सेवाओं को निलंबित कर दिया गया और मध्य दिल्ली के प्रमुख स्कूल, कॉलेज तथा बाज़ार बंद रहे। आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस ने देश भर में व्यापक धरपकड़ की। सी जे पी के प्रमुख नेताओं को दिल्ली में एयर इंडिया के विमान के अंदर से ही हिरासत में ले लिया गया। अनेक प्रमुख नेता व सामाजिक कार्यकर्ता गिरफ़्तार किये गये,कई पत्रकारों को भी जहाँ दिल्ली में गिरफ़्तार किया गया वहीं महात्मा गांधी के परपोते तुषार गांधी को मुंबई पुलिस ने चुनाव आयोग के ख़िलाफ़ प्रदर्शन करने से पहले ही हिरासत में ले लिया और उन्हें मुंबई में प्रदर्शन में शामिल होने के लिये अगस्त क्रांति मैदान जाते समय गिरफ़्तार कर लिया गया। पुलिस ने जंतर-मंतर पर लगभग 2,500 से 3,000 प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया। प्रदर्शन से पहले ही पुलिस ने संदिग्धों और छात्र कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए रात भर तलाशी अभियान चलाकर 100 से अधिक लोगों को निवारक नजरबंदी में लिया था।

इन बंदिशों के बावजूद युवाओं, छात्रों और नागरिकों का भारी आक्रोश सड़कों पर फूट पड़ा। प्रदर्शनकारियों के कई जत्थों ने इंडिया गेट और संसद मार्ग के पास पुलिस बैरिकेड्स को लांघने की कोशिश की, जिससे माहौल काफ़ी तनावपूर्ण हो गया। जब पुलिस ने मुख्य प्रदर्शन स्थल जंतर-मंतर को पूरी तरह सील कर दिया, तो आक्रोशित जनता और छात्र संगठनों ने रणनीति बदलते हुए सफ़दरजंग फ़्लाई ओवर, दिल्ली हाट, राजघाट और कनॉट प्लेस जैसे अलग-अलग इलाक़ों को ही प्रदर्शन स्थल में परिवर्तित कर दिया। अफ़रातफ़री के इसी वातावरण में कनॉट प्लेस और जंतर-मंतर के आसपास पुलिस, प्रदर्शनकारियों के पीछे दौड़ती और उन्हें लाठियों के बल पर खदेड़कर बसों में भरती नज़र आई। कड़ी सुरक्षा के बीच प्रदर्शनकारियों और

सुरक्षा बलों के बीच हिंसक झड़पें भी हुईं, जिसमें कई लोगों के घायल होने की ख़बरें आईं। पुलिस की मौजूदगी में ही सादे लिबास में सत्ता समर्थक भाजपा और आर एस एस के तथाकथित गुंडों का कायरों की तरह एक मासूम बच्ची पर टूटना, प्रदर्शनकारी बच्चियों को मारना,नोचना व उन्हें खींचना पूरे देश को विचलित कर गया। कहाँ तो मोदी सरकार बेटी बचाओ का नारा देती है तो कहाँ सत्ता समर्थक गुंडे देश की बहन बेटियों के साथ इस तरीक़े का घिनौना व शर्मनाक व्यवहार करते हैं ? जिस प्रधानमंत्री के क़ाफ़िले को कभी एम्बुलेंस को रास्ता देते प्रचारित किया गया था आवागमन ठप्प होने के कारण उसी प्रधानमंत्री की नाकों के नीचे अनेक मरीज़ व तीमारदार दवा इलाज से वंचित व परेशान दिखाई दिये। कुछ उपद्रवी तत्वों के हाथों में तलवारें देखे जाने की खबरें आईं, जिससे हिंसक टकराव की स्थिति पैदा हो गई।दिल्ली में हुए इस अभूतपूर्व पारगमन प्रतिबंध और बड़े पैमाने पर हुई गिरफ़्तारियों के ख़िलाफ़ क़ानूनी विशेषज्ञों और विपक्ष ने तीखी प्रतिक्रिया दी है।

भारत के इन प्रदर्शनों व जन आक्रोश ने पूरे विश्व का ध्यान भी आकर्षित किया है। संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार उच्चायुक्त ने 10 अक्टूबर को ही दिल्ली में बड़े पैमाने पर हुई गिरफ़्तारियों पर गहरी चिंता व्यक्त की। संयुक्त राष्ट्र ने भारत सरकार से आग्रह किया कि वह शांतिपूर्ण प्रदर्शन के अधिकार का सम्मान करे और मनमाने ढंग से हिरासत में लिए गए सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं को तुरंत रिहा करे। इसके जवाब में जेनेवा में भारत के स्थायी मिशन ने संयुक्त राष्ट्र की इस टिप्पणी को भारत के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप बताया। भारत ने स्पष्ट किया कि देश का संविधान शांतिपूर्ण सभा की गारंटी देता है, लेकिन सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए उचित प्रतिबंध लगाने का अधिकार क़ानून के दायरे में पुलिस के पास है। वैश्विक मीडिया संस्थानों भी इस आंदोलन को प्रमुख स्थान दिया।अंतरराष्ट्रीय मीडिया का सामान्य निष्कर्ष यह रहा कि दिल्ली में बुनियादी पारगमन सुविधाओं जैसे मेट्रो और रास्ते को बंद करना और शांतिपूर्ण मार्च से पहले ही नेताओं को हवाई जहाज़ व घरों से हिरासत में लेना आदि लोकतांत्रिक अधिकारों के हनन की श्रेणी में आता है।

परन्तु वास्तविकता तो यही है कि अब आने वाले दिनों में दिल्ली सहित देश के तमाम शहरों के %जंतर मंतर% बनने की संभावना है। इन्हीं मांगों के साथ 12 अक्टूबर को कांग्रेस सहित पूरा विपक्षी इण्डिया गठबंधन और देश के युवा बड़ी संख्या में एक बार फिर सड़कों पर उतरने जा रहे हैं। पूरी संभावना है कि इस बार भी जनता की यह आवाज़ पूरे देश में पहले से कहीं ज़्यादा गूंजेगी। विपक्ष की ओर से चेतावनी दी जा चुकी है कि जितनी पुलिस लानी है जितने गुंडे बुलाने हैं, बुला लीजिए। हम डरने और पीछे हटने वाले नहीं हैं। 12 अक्टूबर सोमवार को ही विपक्ष का मुख्य न्यायाधीश से भी मिलने का कार्यक्रम है। विपक्ष दल मुख्य न्यायाधीश से यह बतायेंगे कि जब दिल्ली की सड़कों पर संविधान को तार-तार किया जा रहा है और लोकतंत्र को कुचला जा रहा है, तब कानून के संरक्षक आंखों पर पट्टी डाल कर नहीं बैठ सकते। संविधान की धज्जियां उड़ेंगी तो विपक्ष चुप नहीं बैठ सकता। जवाबदेही तय करना ही होगी। ऐसा लगता है कि ये लड़ाई अब रुकने वाली नहीं है। युवा आक्रोश को दबाने की जितनी भी कोशिश सरकार करेगी उतना ही यह आंदोलन और तीव्र हो सकता है। अब तो राम धरी सिंह दिनकर की यह पंक्तियाँ ही धरातल पर साकार होती नज़र आती हैं कि...

सदियों की ठंढी-बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो।
सिंहासन ख़ाली करो कि जनता आती है।

संपर्क -9896219228
तनवीर जाफ़री

डकलिन और हाथी

एक समय की बात हैं । एक डक का छोटा बच्चा डकलिन था । वह एक तालाब में मजे से रहता था । उसका दोस्त भी एक छोटा हाथी था ।

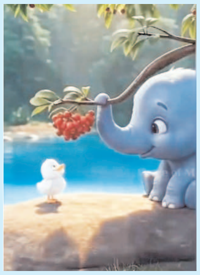

दोनों आपस में एक दूसरे का मदद किया करते थे । एक दिन उसे बहुत ज़ोर की भूख लगी । फिर वह अपने दोस्त हाथी के पास चला गया और बोला कि आप मेरे लिए कुछ फल का इंतजाम कर दीजिये । तब छोटा हाथी बोला अरे वह देखो कितना सारा जामुन फला हैं चलो चलकर तोड़ते हैं । इसके बाद डकलिन जामुन को देखकर उछल उछल कर अपने चोंच से पकड़ने लगा । लेकिन जामुन बहुत ऊपर था वह तोड़ नहीं पा रहा था । इसे हाथी देख रहा था । तब उसने उसकी मदद करने के लिए एक उपाय सोंचा । जिस डंगाल पर सबसे अधिक जामुन फला था उस डंगाल को हाथी अपने सूंड से नीचे कर दिया । जब डंगाल नीचे आ गया तब डकलिन उस गुच्छे से एक जामुन को अपने चोंच में पकड़ लिया लेकिन वह नहीं टूटा । तब हाथी ने उस डंगाल को जोर से हिला दिया । सभी फल गिर गया । डकलिन बड़ा खुश हुआ और हंसने लगा । फिर मजे से बहुत सारा जामुन खा लिया । लेकिन उसे एक जामुन उस हाथी के सूंड में रख दिया । यह देख हाथी को बहुत दया आ गया । उसने डकलिन को हग करने लगा । डकलिन उसके सूंड में बैठ गया । हाथी ने उसे अपनी सूंड में उठाकर अपने पीठ पर बैठा लिया । डकलिन खुशी के मारे हंसने लगा । और दोनों हंसी खुशी से रहने लगे ।यह कहानी हमे याद दिलाता हैं कि हमें छोटे से छोटे जानवरों का मदद करनी चाहिए।

जान्हवी , कक्षा तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल शंकरदाह,जिला धमतरी,छत्तीसगढ़

विचार पुष्प

जीवन और परिस्थितियां

जीवन में शांत रहकर
परिस्थितियों को समझना,
चाहिए क्योंकि सब हमारे
उत्तर के योग्य नहीं होते।

(गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)
श्री हरि विष्णु कृपा, ई-07, सेक्टर हेडक्वार्टर फिरोज़पुर कैंट, जालन्धर कैंट, पंजाब।

विज्ञानकु की विज्ञान प्रसार में भूमिका

विज्ञानकु विज्ञान और कविता के मेल से विकसित एक लघु काव्य-विधा है, जिसकी विज्ञान प्रसार में प्रमुख भूमिका वैज्ञानिक तथ्यों और विचारों को सरल, संक्षिप्त तथा रुचिकर रूप में लोगों तक पहुंचाना है। हाइकु से प्रेरित इस विधा को सुभाष चंद्र लखेड़ा ने जनवरी 2021 में आरंभ किया। उनके अनुसार, हाइकु जहां प्रकृति की अनुभूति की कविता है, वहीं विज्ञानकु विज्ञान की अनुभूति की कविता है।

विज्ञान प्रसार में विज्ञानकु की भूमिका-

1. वैज्ञानिक जानकारी को सहज बनाना

विज्ञानकु का उद्देश्य छोटे काव्यात्मक रूप में वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत करना है। इसकी संक्षिप्तता पाठक को किसी अवधारणा से परिचित कराने का माध्यम बन सकती है। लखेड़ा का अधोउद्धृत विज्ञानकु इसका स्पष्ट उदाहरण है-

चाँद न मामा
विज्ञानकु कहेगा
है उपग्रह।

यहां चंद्रमा से जुड़ी परिचित सांस्कृतिक छवि के साथ उसकी वैज्ञानिक पहचान रखी गई है। उद्देश्य कल्पना का निषेध करना नहीं, बल्कि वैज्ञानिक कथ्य में तथ्य को स्पष्ट रखना है।

2. विज्ञान के प्रति रुचि और जिज्ञासा जगाना

विज्ञानकु विज्ञान की विस्तृत व्याख्या का विकल्प नहीं, बल्कि उसकी ओर आकर्षित करने वाला प्रवेशद्वार हो सकता है। युवा भूविज्ञानी डॉ0 रणधीर संजीवनी के अनुसार विज्ञानकु बहुत सक्षम और रोचक विधा है। यह उस चूरन की फाँक जैसा है जिसे हम हाजमा दुरुस्त करने के लिए लेते हैं। विज्ञानकु छोटे से कलेवर में पूरी जानकारी देते हुए वैज्ञानिक चेतना को दुरुस्त कर देता है। यह उस स्वादिष्ट आचार या चटनी के चटखारे जैसा है जो स्वाद में इजाफा करता है। विज्ञानकु विज्ञान में रूचि बढ़ा देता है। विज्ञानकु में आकर्षण है। उसमें चुटीलापन और गाम्भीर्यता का अद्भुत संयोजन है।

3. तार्किक और प्रमाण आधारित दृष्टि को प्रोत्साहन

विज्ञान प्रसार का अर्थ केवल जानकारी देना नहीं; तथ्य, तर्क और साक्ष्य का महत्व समझाना भी है। हरेन्द्र श्रीवास्तव के विज्ञानकु इसी उद्देश्य को व्यक्त करते हैं–

वही है मान्य
कहे ये विज्ञानकु
देता जो साक्ष्य।

इस प्रकार विज्ञानकु वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संदेश दे सकता है। हालाँकि, ऐसा संदेश देना और पाठकों के व्यवहार में वास्तविक परिवर्तन ला पाना अलग बातें हैं; उसकी प्रभावशीलता का आकलन अलग से आवश्यक होगा।

4. अंधविश्वास के विरुद्ध वैज्ञानिक चेतना

लखेड़ा की विज्ञान-प्रसार संबंधी रचनाओं में पाखंड के स्थान पर वैज्ञानिक जानकारी पहुंचाने का स्पष्ट आग्रह है। इस रूप में विज्ञानकु का उद्देश्य केवल विज्ञान की उपलब्धियां गिनाना नहीं, बल्कि समाज में विवेकपूर्ण सोच को बढ़ावा देना भी है।

5. वैज्ञानिकों और उनके योगदान से परिचय

विज्ञानकु वैज्ञानिक व्यक्तित्वों के प्रति जिज्ञासा भी पैदा कर सकता है। लखेड़ा की रचनाओं में रामानुजन, रमन, होमी जे. भाभा, कलाम और साराभाई को जानने तथा याद रखने का आह्वान मिलता है। ऐसी रचनाएं उनके कार्यों के विस्तृत परिचय की शुरुआत बन सकती हैं।

विज्ञानकु की साहित्यिक सुंदरता तभी विज्ञान प्रसार में सार्थक है, जब उसका कथ्य वैज्ञानिक रूप से सही हो। लखेड़ा की परिभाषात्मक रचनाएं भी सटीक तथ्य पर बल देती हैं। इसलिए इसे विज्ञान तक पहुंचने का संक्षिप्त और आकर्षक माध्यम मानना उचित है, न कि जटिल वैज्ञानिक विषयों के पूर्ण विवेचन का विकल्प। इसकी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है–पाठक के मन में विज्ञान के लिए रुचि जगाना और उसे तथ्यपरक समझ की ओर ले जाना।

विज्ञानकु के शुरुआती रचनाकार हरेन्द्र श्रीवास्तव के पिट्सबर्ग (अमेरिका) से प्रकाशित होने वाली मासिक ई- पत्रिका सेतु में प्रकाशित अधोलिखित विज्ञानकु इस विधा के उद्देश्य और इससे अपेक्षित लाभों को बेहतरीन तरीके से व्यक्त करते हैं।

लक्ष्य महान
विज्ञानकु का ध्येय
फैले विज्ञान।
कहें वो कथ्य

विज्ञानकु की शर्त
जिसमें तथ्य।
तार्किक सोच
विज्ञानकु से बढ़े
बुद्धि विवेक।
वही है मान्य
कहे ये विज्ञानकु
देता जो साक्ष्य।

विज्ञानकु मंजूषा पुस्तक के संपादक द्वय श्री आदराम नायक और सुश्री राधा गुप्ता के अनुसार विज्ञान प्रचार-प्रसार एवं संचार में विज्ञानकु के योगदान का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि विगत गत वर्षों के दौरान इसके लेखकों और पाठकों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई और आज देश - विदेश में इसे पसंद करने वालों की संख्या लाखों में पहुंच गई है।

इसकी पहचान का श्रेय विज्ञानकु लेखकों, विज्ञानकु प्रकाशित करने वाली विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, ऑनलाइन पोर्टल ' भारतीय विज्ञान संचारकों का समूह ' और फेसबुक को जाता है। विज्ञानकु विधा पर आदराम नायक और अल्का नायक द्वारा लिखित विश्व की प्रथम पुस्तक विज्ञानकु- एक हजार-नव संचार और आदराम नायक और राधा गुप्ता द्वारा संपादित दूसरी पुस्तक विज्ञानकु मंजूषा का भी इस विधा को चर्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

विज्ञानकु के सत्रह अक्षरों में रचनाकार अपनी अद्भुत प्रतिभा से किसी भी संदेश को समाज के निचले तबके तक पहुंचा सकते हैं। उदाहरण के लिए अभी इस वर्ष के जो विज्ञान नोबेल पुरस्कार मिले हैं, उनको लेकर डॉ. रवींद्र दीक्षित ने जो विज्ञानकु लिखे हैं, वे आम लोगों को भी इन नोबेल से सम्मानित वैज्ञानिको की उपलब्धियों की जानकारी सरल शब्दों में दे देते हैं। उदाहरण के लिए चिकित्सा के नोबेल पर उनके लिखे निम्न विज्ञानकु देखिए। चिकित्सा विज्ञान का 2026 का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों को संयुक्त रूप से मिला। इस विषय पर उनके दी विज्ञानकु आप देख लीजिये।

नोबेल मिला
कार्ल, पीटर जॉर्ज को
चिकित्सा का।
मिला नोबेल
ऑप्टोजेनेटिक्स में
बड़ी खोज ये।

इसी तरह से अभी दस अक्टूबर को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर सुश्री रचना दीक्षित के अधोलिखित विज्ञानकु इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि विज्ञानकु विज्ञान सम्मत लोकोपयोगी बातों को सरल शब्दों में लोगों तक पहुंचाने में सक्षम हैं।

स्वस्थ दिमाग
सेहत का खजाना
सबने माना।
है तनाव ही
बैरी सबसे बड़ा
द्वार पे खड़ा।
तनाव करे
मस्तिष्क पर वार
जीना बेकार।
सेहत सही
रहो सकारात्मक
बड़ों ने कही।

विज्ञानकु एक हज़ार - नव संचार पुस्तक के लेखक श्री आदराम नायक के अनुसार किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए विज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का व्यापक प्रचार-प्रसार आवश्यक है। विज्ञान-संचार की अनेक विधाएं प्रचलन में हैं; इन्हीं में एक नवीन और प्रभावी विधा है - विज्ञानक'। इनके माध्यम से वैज्ञानिक तथ्यों को सहज, सरस और जनसुलभ रूप में पहुंचाया जा सकेगा तथा समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को नई दिशा मिलेगी।

पिछले कुछ समय पर विज्ञानकु विधा में सक्रिय सुश्री रचना दीक्षित जी का कहना है कि विज्ञानकु विज्ञान के तथ्यों को रोचक ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। उनके अनुसार यह विधा विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए तो लाभप्रद है ही, साथ ही आम लोग भी इससे लाभान्वित होंगे।

विज्ञानकु के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए इस विधा के जनक ने विज्ञानकु मंजूषा पुस्तक में अधोलिखित विज्ञानकु के माध्यम से अपना मंतव्य स्पष्ट किया है।

श्रेष्ठ विचार
विज्ञानकु से खोलें
ज्ञान के द्वार।
सभी से कहें
विज्ञानकु सृजन
करते रहें।
लिख रहे जो
विज्ञानकु इधर
वंदनीय हों।
कोशिश जारी
विज्ञानकुकारों की
संख्या हो भारी।
विज्ञानकु हो
दुनिया में चर्चित
सभी का मत।

- सुरेंद्रा लखेड़ा, सान होजे, कैलिफोर्निया

महात्मा गांधी नोबेल पुरस्कार के लिए 5 बार नॉमिनेट होने पर भी वंचित रहे?

भारतीय मूल की 'नावी' पिल्लई को नोबेल शांति पुरस्कार 2026 मिलना भारत के लिए गर्व और गौरव की बात है। लेकिन शांति और अहिंसा के लिए अंतिम सांस तक लड़ने वाले महात्मा गांधी इस पुरस्कार के लिए पांच बार नामित होने पर भी आखिर किन कारणों से नोबल शांति पुरस्कार नहीं मिला।

महात्मा गांधी वह 20वीं सदी में अहिंसा और शांति के सबसे बड़े प्रतीक माने जाते है। जानकारी के अनुसार साल 1937 से 1948 के बीच उन्हें कुल पांच बार इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए नामित किया गया था। फिर भी उन्हें कभी नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिला। यह सवाल आज भी इतिहास प्रेमियों एवं गांधी जी के षुभचिंतकों को हैरान करता है कि दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले शख्स को नोबेल समिति ने क्यों बार-बार नजरअंदाज किया।

बताया जाता है गांधीजी को पहली बार 1937 में नार्वे की संसद के सदस्य ओले कोल्ब्योर्नसेन ने नॉमिनेट किया था। इसके बाद उन्हें 1938, 1939, 1947 और आखिर में 1948 में भी मनोनीत किया गया। हालांकि, नोबेल कमिटी की अपनी रिव्यू और इंटर्नल रिपोर्ट्स से पता चलता है कि गांधीजी को यह पुरस्कार ना देने के पीछे पॉलिसी, पॉलिटिकल और इंस्टिट्यूशनल कारण बताए गये थे।

सबसे पहले 1937 से 1939 के शुरुआती नामांकन के दौरान समिति के सलाहकारों ने गांधीजी की अहिंसा की नीति पर सवाल उठाए। उनके अनुसार गांधीजी हमेशा अहिंसावादी नहीं थे। कमिटी का ऐसा मानना था कि भारत में उनकी तरफ से चलाए गए आंदोलनों से कई जगहों पर हिंसा भड़की। ऐसा हुआ भी था कि असहयोग आंदोलन के दौरान कई जगहों पर हिंसा भड़क उठी थी और चौरीचौरा कांड की घटना हो गई।

जानकारों की माने तो नोबल कमिटी के कुछ एक्सपर्ट्स के साथ ही आलोचकों का कहना था कि गांधीजी खुद अहिंसा में विश्वास रखते थे लेकिन वे अपने विशाल जन-आंदोलनों को हिंसक होने से पूरी तरह रोकने में असमर्थ रहे। 1937 का नोबल चेलवुड के लॉर्ड सेसिल को मिल गया। कोल्ब्योर्नसेन ने 1938 और 1939 में भी गांधीजी को मनोनीत किया लेकिन उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिला।

नोबेल समिति की कार्य प्रणाली पर नजर रखने वालों के अनुसार समिति का उस समय का नजरिया भी कुछ संकीर्ण और पारंपरिक टाइप का था। उस दौर में नोबेल शांति पुरस्कार मुख्य रूप से यूरोपीय और अमेरिकी पॉलिटिशियन, अंतर्राष्टीय कानून के जानकारों या संस्थागत शांति समझौतों पर साइन करने वालों को दिया जाता था। गांधीजी इस पारंपरिक ढांचे में फिट नहीं बैठते थे। वह अंतर्राष्टीय स्तर पर शांति समझौते करने वाले नेता नहीं थे, बल्कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ देश की मुक्ति आंदोलन की अगुवाई कर रहे थे।

बताया जाता है, 1947 में जब भारत देश आजाद हुआ और देश का विभाजन हो गया, तब गांधीजी को फिर से नॉमिनेट किया गया। लेकिन इस बार भारत और पाकिस्तान के बीच भड़के सांप्रदायिक दंगों और तनावपूर्ण स्थिति के कारण समिति संकोच में पड़ गई। गांधीजी के कुछ बयानों का मतलब गलत समझा गया, जिसमें न्याय पाने के लिए युद्ध की संभावना का जिक्र था। हालांकि गांधीजी युद्ध करने की बात नहीं कर रहे थे। 5 सदस्यों वाली समिति में से 3 सदस्य गांधीजी को पुरस्कार देने के पक्ष में नहीं थे, इसलिए उस साल यह पुरस्कार फनांमते नामक एक धार्मिक और मानवतावादी संगठन को दे दिया गया।

महात्मा गांधी की 30 जनवरी 1948 के दिन हत्या कर दी गई, जिसके कुछ ही दिन पहले उन्हें 1948 के पुरस्कार के लिए अंतिम बार नॉमिनेट किया गया था। उस साल के नोबल पीस प्राइज गांधीजी को देने के लिए 6 लेटर्स आए थे। बताया जाता है नोबेल समिति ने गांधीजी को मरणोपरांत पुरस्कार देने पर विचार किया था। हालांकि, उस समय के नियमों के अनुसार मौत के बाद पुरस्कार देने का कोई प्रावधान नहीं था। और ना ही गांधीजी किसी ऐसी औपचारिक संस्था से जुड़े थे जिसे उनकी जगह यह पुरस्कार सौंपा जा सके।

नियमों की इस बाधा के कारण नोबेल समिति ने 1948 में यह ऐलान किया कि इस साल कोई भी योग्य और जीवित उम्मीदवार नहीं है। इस वजह से 1948 का नोबेल शांति पुरस्कार किसी को भी नहीं दिया गया। ऐसा माना जाता है कि 1948 में गांधीजी की जगह को खाली रखकर नोबेल समिति ने उन्हें एक तरह से मौन सम्मान दिया था। जानकारों के अनुसार अगर उस साल हत्या नहीं हुई होती तो गांधीजी को शांति पुरस्कार मिलने की संभावना अधिक थी।

नोबेल फाउंडेशन के नियम के अनुसार यह पुरस्कार सामान्यत मौत होने के बाद नहीं दिया जा सकता है। इसलिए अब गांधीजी के हिस्से में यह शांति पुरस्कार नहीं आ सकता है। पुरस्कार केवल जिंदा व्यक्ति या संगठनों को ही मिल सकता है। हां यह जरूर है कि अगर किसी की मौत नॉमिनेट होने के बाद हो जाए तो फिर प्राइज को छीना नहीं जाता है बल्कि दे दिया जाता है।

1989 में जब 14वें दलाई लामा को नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया, तब समिति के अध्यक्ष ने कहा कि यह पुरस्कार आंशिक रूप से

महात्मा गांधी की स्मृति को भी एक श्रद्धांजलि है। उस समय नोबेल समिति ने सार्वजनिक तौर पर यह स्वीकार किया है कि महात्मा गांधी को नोबेल शांति पुरस्कार ना देना उनके इतिहास की सबसे बड़ी भूलों में से एक थी। भले ही उन्हें नोबेल पुरस्कार ना मिला हो लेकिन गांधीजी की अहिंसा की विरासत दुनिया भर के महान नेताओं को हमेशा प्रेरित करती रही। इस सूची में मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे कद्दावर व्यक्तित्व भी शामिल रहे है। लेकिन गांधीजी को नोबेल नहीं मिलना एक बहुत बड़ी और गहरी कसक हमेशा बनी रहेगी।

- रामस्वरूप रावतसरे